एक गुप्त यात्रा (A Hidden Voyage)

जाने मुक्ति के रहस्य और जीवन के उद्देश्य को।

हमेशा की तरह बाबू भाई के पोते-पोतियों ने उन्हें घेर लिया था। राहुल, सुनील और लीना उत्सुकता से उस गुप्त कहानी को सुनने के लिए तैयार थे, जो वे उन्हें सुनाने वाले थे।

बाबू भाई ने कहानी आरंभ करते हुए कहा कि, "एक बार की बात है, एक जहाज का कप्तान था। एक दिन जहाज के साथ एक छोटा सा एक्सीडेंट हो गया लेकिन उसने वह नजरअंदाज किया। परंतु, लगभग एक घंटे बाद, निचले डेक पर लौटने पर, उसे एक बड़ा लीकेज होते हुए दिखाई दिया। इंजीनियरों की विशेषज्ञ टीम ने उसे ठीक करने की कोशिश की, परंतु वे वहां से पानी अंदर आने को रोक नहीं पाए। जहाज अब डूबने वाला था और किसी को भी आने वाली उस आपदा के बारे में पता नहीं था।

कैप्टन ने मुख्य डेक का निरीक्षण किया तो देखा कि सारे ही यात्री खुशियां मना रहे थे। संगीत, गायन, नृत्य और हँसी से हवा गूंज रही थी। खुशी के उल्लास के बीच कैप्टन ने घोषणा करने में संकोच किया क्योंकि उसे ऐसा महसूस हुआ कि कोई भी वह बात सुनने के मूड में नहीं था। पार्टी के लिए केक बेक किए गए, लोगों को खिलाए गए और उत्सव पूरे जोरों से जारी रहा।

बाबू भाई एक पल के लिए रुके, तो सुनील ने जिज्ञासा से पूछा, "क्या इस कहानी का कोई गहरा अर्थ है? क्या यह जहाज किसी और चीज का द्योतक है?"

बाबू भाई ने सिर हिलाया, "बिलकुल सही समझा है! 'पृथ्वी ग्रह' इस समय उस जहाज की स्थिति में है। नाव डूब रही है, जबकि सभी यात्री पार्टी में तल्लीन हैं।"

उन्होंने अपने पोते-पोतियों से दो सवाल पूछे, "कल्पना कीजिए कि आप और आपके दोस्त उस जहाज के यात्रियों में थे। उनके लिए आप क्या करेंगे? और उस स्थिति में, अपने लिए आप क्या करेंगे?"

राहुल ने तुरंत जवाब दिया, "हम सभी बाहर आएँगे।" बाबू भाई ने सहमति जताते हुए कहा, "बेशक, आप दूसरों को और खुद को बचाना चाहेंगे। ऐसे समय केक खिलना या पार्टी करना प्यार का कार्य नहीं है बल्कि एक तरह से उन्हें धोखे में रखना है। ऐसी हालत में खास केबिन में बैठकर आराम करना, सुंदर संगीत सुनना कोई बढ़िया जीवन नहीं कहलाता है, बल्कि वह अज्ञानता का जीवन है।

लीना ने कहा, "मेरी मम्मी आज शाम स्ट्रॉबेरी केक बना रही हैं।"

सुनील ने पूछा, "क्या दूसरों को उपहार देना, वास्तविक दुनिया में केक देने के बराबर है? क्या यह भी धोखा देने समान होगा?"

बाबू भाई ने पुष्टि की, "जो कुछ भी डूबती नाव में खुद को या दूसरों को आरामदायक रखता है, वह भ्रामक है। नाव की वास्तविक स्थिति को पहचाने बिना आराम पसंद करना या सब कुछ ठीक महसूस करना अज्ञानता है और वह दुख की ओर ले जाता है।"

सुनील ने पूछा, "डूबती नाव से बाहर आना, इसका सही रूप में क्या मतलब है?"

बाबू भाई ने समझाया, "इसके लिए जरूरी है कि बड़ा नक्शा देखा जाए। अधूरे और सिमित दृष्टिकोण से इसे समझा नहीं सकते।"

सुनील ने पूछा, "क्या बड़ा नक्शा देखना मुश्किल है?"

बाबू भाई ने उत्तर दिया, "यह कठिन हो सकता है क्योंकि बड़े नक्शे में दृश्य और अदृश्य, दोनों शामिल हैं। बड़ी तस्वीर देखने के लिए आध्यात्मिक समझ की आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से व्यक्ति दृश्य और अदृश्य को मिलाकर संपूर्ण चित्र देखता है। इस चित्र में केवल नाव ही दिखाई देती है, असली यात्री स्वयं अदृश्य हैं।"

उन्होंने एक चित्र बनाकर दर्शाया, "ये अदृश्य यात्री अदृश्य घर, परे की दुनिया के हैं। यह भौतिक विश्व किसी का घर नहीं है; नाव यात्रियों के रहने का स्थान नहीं होती है! नाव किसी का घर नहीं है। शरीर अदृश्य यात्रियों की ड्रेस मात्र हैं। जब हम इस प्रकार की आध्यात्मिक दृष्टि से देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें केवल ड्रेस को नहीं बल्कि अदृश्य यात्रियों को भी बचाने की जरूरत है।"

सुनील ने पूछा, "क्या कोई चीज़ इन अदृश्य यात्रियों को कभी नुकसान पहुंचा सकती है?"

लीना ने कहा, "मेरी मम्मी ने मुझे बताया था कि मरने के बाद आत्माएं स्वर्ग में जाती हैं।"

बाबू भाई ने गंभीरता से कहा, "अदृश्य यात्री अपनी समस्याएं खुद पैदा कर सकते हैं। उन्हें स्वतंत्र रहने और नाव से बाहर निकलने में सक्षम होने की आवश्यकता है, लेकिन वे अनजाने में खुद को डूबते जहाज से बांध लेते हैं।"

लीना ने कहा, "खुद को बांधते है? यह अजीब है!"

बाबू भाई ने आगे कहा, "हर समय जब उनके विचार भौतिक दुनिया से जुड़े हुए सांसारिक और साधारण होते हैं, वे डूबती नाव में बंधे होते हैं। जैसे ही वे नाव के भीतर वस्तुओं के साथ नए लगाव बनाते हैं, वे नए बंधन बनाते हैं। इस प्रकार वे डूबते जहाज़ पर गांठ लगाकर खुद को बांध रहे होते हैं।"

व्यसन और आसक्तियों से भरा जीवन जटिल दोहरी गांठें बनाता है। कामवासना भी दोहरी गांठें बनाती है। इसका मतलब है कि अंतिम समय में, भले ही उन्हें एहसास हो जाएगा कि उन्हें बाहर आने की जरूरत है, वे गांठें वहां से भागने में रुकावट बन जाती हैं। अदृश्य यात्री अपने आप में स्वाभाविक रूप से सुखी और श्रेष्ठ कुल के है लेकिन बंधन और गांठें उन्हें डूबती नाव में लटकाए रखती हैं। यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका एकमात्र कारण ही बंधन हैं।

सुनील ने पूछा, "क्या किसी भी गांठ में बंधे बिना रहना संभव है?"

बाबू भाई ने उत्तर दिया, "एक प्रबुद्ध व्यक्ति (enlightened person) कभी धोखा नहीं खाएगा। नाव के साथ क्या हो रहा है, इसकी गहन जागरूकता वह रखता है। संपूर्ण

नक्शे (big map) की समझ के कारण और आध्यात्मिक दृष्टि के कारण, वह स्वयं कौन है और नाव से परे की उसकी दुनिया की स्मृति (awareness) में रहता है। वह कालातीत (timelessness) होने के अनुभव को बुद्धि से समझ सकता है। वह अपने साथी यात्रियों के प्रति गहरा स्नेह रखता है। वह खुद किसी भी वस्तु से बंधन नहीं बनाता और दूसरों का डूबती नाव के साथ गांठों से बंधना उसे पूरी तरह से बेतुका लगता है।"

लीना ने पूछा, "सच्चे जीवन में डूबती नाव से कोई कैसे बाहर आ सकता है?"

बाबू भाई ने बताया, "हर बार जब वह आध्यात्मिक दृष्टि का उपयोग करता है, तो उसके बाहर आने की संभावनाओं को वह बढाता है। हर बार वह परे के परम घर को याद करता है, तो वह नाव से बाहर आने की दिशा में बढ़ता है।"

हर बार जब वह जागता है और महसूस करता है कि वह इस नाव और शरीर में अदृश्य यात्री है, तो यह जागने जैसा है और वह नाव से बाहर आता है। हर बार, वह खुद को भौतिक दुनिया में एक मेहमान और शरीर सहित आसपास की हर चीज का एक अल्पकालिक ट्रस्टी मानता है, वह डूबती नाव से बाहर आ रहा है। उसका परम मित्र, जो सदैव बंधनों से मुक्त रहता है, जब भी वह उसे याद करता है तो वह नाव से बाहर आ जाता है।

इस प्रकार अलग-अलग प्रैक्टिस से आगे कदम बढ़ा सकते है। ये प्रैक्टिस एक-दूसरे की पूरक हैं, जो यात्रियों को गांठें खोलने में मदद करती हैं और यात्रा में उन्हें स्वतंत्रता की ओर बढ़ने में योगदान देती हैं।

सुनील ने कहा, "यह तो समय के विरुद्ध दौड़ने जैसा लगता है।"

राहुल ने सवाल किया, "और नाव को बचाने की कोशिश के बारे में क्या?"

बाबू भाई ने आंखों में चमक के साथ जवाब दिया, "ज्यादातर यात्रियों का ध्यान नाव को बचाने पर है और ज्यादातर लोग इस कार्य में शामिल होंगे, जो बहुत अच्छा है! लेकिन यहां एक बड़े भ्रम पर विचार करना जरूरी है। कोई समस्या के बिना चलने वाली नावों में भी यात्रियों को गांठों से नहीं बांधा जाता है। यदि नाव खतरे में पड़ जाती है तो बिना कुछ सोचे यात्री नाव से बाहर निकलने की कोशिश करेंगे। जबकि यहां, यात्री नाव को अपना घर मानते हैं। वे बडे सम्मेलन आयोजित कर सकते हैं और हम प्रगति कर रहे हैं इस भासना में रह सकते हैं, लेकिन वास्तव में वे अपना बहुमूल्य समय बर्बाद कर रहे हैं। जो लोग भ्रम से मुक्त हैं और गांठों से मुक्त हैं, वे स्वयं के लिए उपयोगी हैं और दूसरों के लिए भी उपयोगी हैं।"

सुनील ने घोषणा की, "मैं आशावादी (optimist) हूं और विश्वास करना चाहता हूं कि जहाज नहीं डूबेगा।"

बाबू भाई ने समझाया, "वर्तमान स्थिति में, हमें एक स्पष्ट निदान की आवश्यकता है। जब हम किसी संकट का सामना अधूरे नक्शे, अयोग्य दृष्टि और बिना निदान से करते हैं, तो आशावाद खोखला हो जाता है - धोखा खाने की या बाद में पछतावा होने की संभावना अधिक होती है। जब व्यक्ति समझदार है और निदान स्पष्ट है, तो वह

यथार्थवादी (realist) बन जाता है। उसे फल मिलेंगे। यथार्थवादी को पछतावा नहीं करना पड़ता।"

बाबू भाई ने आगे कहा, "लेकिन अगर कोई गांठों से मुक्त होने में सफल भी हो जाए, तो भी मिशन अभी खत्म नहीं हुआ है।" कल्पना कीजिए कि आप डूबती नाव से सफलतापूर्वक बाहर आ गए हैं, निर्धारित विधि का परिश्रमपूर्वक पालन करके और गांठों और बंधनों से मुक्त हो गए हैं। जैसे ही आप अपने परम मित्र से मिलते हैं, वह आपको मुक्त होने के लिए बधाई देता है। अब आप उस निशब्द आनंद और स्वतंत्र होने की राहत का अनुभव कर रहे हैं ।

हालाँकि, अप्रत्याशित (unexpected) घटना घटती है - आपका परम मित्र आपको उसी डूबती नाव पर लौटने का निर्देश देता है।"

लीना ने आश्चर्य से कहा, "क्यों? वहाँ तो खतरा है!"

बाबू भाई ने आगे कहा, "आपको बताया गया है कि उस डूबती नाव में आपके साथी यात्री अभी भी गंभीर खतरे में हैं। स्वयं स्वतंत्र होने के अनुभवी होने कारण आप दूसरों को सुरक्षा की दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए सही व्यक्ति हैं। आपसे कहा गया है 'उसी नाव में वापस जाओ, आपका समय और संसाधन अब इस मिशन के लिए इस्तेमाल करो, लेकिन ध्यान रहे कि आप हमेशा निकास (exit) के पास रहो।' जब अंतिम सीटी बजती है, तो आपको वापस वहां से उड़ने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।"

अब आप उसी डूबती हुई नाव में वापस जाते हैं, लेकिन एक अवतार के रूप में, एक श्रेष्ठ वृत्ति के साथ। भौतिक दुनिया से मुक्ति पाने के बाद, अदृश्य यात्री को उसी दुनिया, उसी शहर, उसी परिवार, उसी शरीर और उसी नौकरी में वापस भेज दिया जाता है, लेकिन एक दिव्यता के साथ में। शरीर सहित हर वस्तु के प्रति आपकी वृत्ति ट्रस्टी होने की है।

नाव में कुछ भी किसी भी यात्री का नहीं हो सकता। एक अवतार के रूप में, आपका मिशन स्पष्ट है - अन्य साथी यात्रियों को स्वतंत्र और सुरक्षित होने के लिए मदद करना।

सुनील ने पूछा, "वह शरीर निर्वाह कैसे करता है? उदाहरण के लिए, क्या वह नौकरी करेगा?"

बाबू भाई ने बताया, "यदि वह कोई नौकरी करता है, तो वह शरीर की आजीविका के लिए और अपने उच्चतम कार्य में मदद करने हेतु होगी। वह उसकी गुप्त मिशन जो उसका वास्तविक कार्य है, उसके प्रति सचेत होगा। खाना खाते समय भी उसका दृष्टिकोण यही होगा कि वह शरीर को मिशन के लिए उपयोग करने में सक्षम बना रहा है। परम मित्र दो चेतावनियाँ देता है। सबसे पहले, निकास द्वार के करीब रहें। दूसरा, पार्टी में शामिल न हों।

लीना ने सोचा, "नाव और यात्रियों का आखिरी में क्या होगा?"

बाबू भाई ने निष्कर्ष दिया, "दृश्य और अदृश्य की कहानी अभी, हमारे सामने चल रही है। एक तरफ बचाव के लिए आई हुई रस्सियां मैं देख रहा हूं और दूसरी तरफ फ्रेश बने हुए केक की सुगंध भी महसूस कर रहा हूं। बचाव के लिए मिशन और पार्टी, दोनों ही अंत तक जारी रहेगी।"

आगे क्या है? अधिक जानने के लिए:

https://www.cambridgeinnerspace.org/hidden-voyage/ (for English)
https://vigyan.uk/ (for Hindi)
बचाव मिशन की जानकारी, संसाधनों और समर्थन के लिए।